हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL7**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Arvind Pratap Singh

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	5	0	6	0	7	3

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): अरविंद

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 141½

टिप्पणी (Remarks): अच्छा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) यहु तन जालौं मसि करूं, ज्यूं धुंवां जाई सरग्गि।
मति वै राम दया करै, बरसि बुझावै अग्गि।

प्रस्तुत दोहा श्यामसुंदर दास द्वारा संपादित 'कबीर ग्रन्थावली' के 'विरह को अंग' शीर्षक से उद्धृत है। कबीर के काव्य में व्याप्त विरह-भावना का यहाँ स्पष्ट निदर्शन हुआ है।

ईश्वर और आत्मा के विरह से उत्पन्न बेचैनी और मिलन की छटपटाहट क्रांतिकारी कवि कबीर का एक नितांत भिन्न और अधिक मानवीय स्वरूप प्रस्तुत करती है। कबीरदास का मंतव्य है कि ईश्वर से मिलन के लिए वे इस नश्वर शरीर को जलाकर रसे स्याही बना देंगे। विरहाग्नि से जो धुआँ स्वर्ग जाएगा, संभवतः उसके प्रभाव से राम को मेरा स्मरण हो और वे मुझ पर दया कर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपने प्रेम की वर्षा से इस विरहाग्नि को शांत करने की कृपा करें।

अन्यत्र इसी पद से मिलता-जुलता कबीर का भिन्न पद भी है, यथा-

"यह तन जारौं मसि करौं।
लिखौं राम का नाउं।

काव्य-सौंदर्य

भाषा - सधुक्कड़ी (सरगि, अगि में पंजाबी प्रभाव)

रस - विप्रलंभ शृंगार

छन्द - दोहा

अलंकार - अनुप्रास

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) उर में माखनचोर गड़े।
अब कैसेहू निकसत नहिं, ऊधो ! तिरछे है जो अड़े।।
जदपि अहीर जसोदानंदन तदपि न जात छँड़े।
वहाँ बने जदुबंस महाकुल हमहिं न लगत बड़े।।
को बसुदेव, देवकी है को, ना जानैं औ बूझै।
सूर स्यामसुन्दर बिनु देखे और न कोऊ सूझै।।

सूरदास के 'भ्रमरगीतसार' में गोपियाँ अपने सहज ज्ञान और सीधे-साद तर्कों से उद्धव के ज्ञानमार्ग का प्रत्याख्यान करती हैं। प्रस्तुत पद में इसी भाव को व्यक्त किया गया है।

गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हमारे हृदय में तो कृष्ण का ही निवास है, इसलिए प्रेम को छोड़कर यह निराकार ईश्वर का ज्ञान उसमें समा नहीं सकता। कृष्ण की त्रिभंगी मुद्रा की ओर संकेत करते हुए गोपियाँ कहती हैं कि हमारे हृदय में कृष्ण तिरछे होकर अड़ गए हैं जिन्हें प्रयास करने पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी निकाला नहीं जा सकता है। यद्यपि कृष्ण के उलाहनापूर्वक भक्ति करकर भी वे गोपियाँ उन्हें भूल नहीं पातीं। गोपियों का कहना है कि देवकी- वासुदेव और यदुवंश के कुलपति बने कृष्ण को हम नहीं जानतीं। हमारा कृष्ण तो इसी गोकुल में हमारे साथ ही लीला कर बड़ा हुआ है। अब उस श्यामसुंदर के बिना हमें और हमारे हृदय को और कुछ नहीं सूझता।

काव्य सौंदर्य :-

भाषा - ब्रजभाषा
रस - वियोग श्रृंगार (व्यंग्य भी)
छन्द - गेयपद
अलंकार - अनुप्रास

अन्यत्र भी गोपियाँ कहती हैं कि 'हमरे हरि हारिल की लकरी' तथा 'ऊधौ मन न भए दस बीस।'

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जोऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्व।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व।।

नागमती का वियोग-वर्णन सम्पूर्ण हिंदी साहित्य में अप्रतिम स्थान का अधिकारी है। प्रस्तुत काव्यांश जायसी कृत 'पद्मावत' के 'नागमति-वियोग-खण्ड' से उद्धृत है।

अपने पति रत्नसेन के वियोग में नागमति अपना रानीपन भूलकर साधारण स्त्री के समान दुखी है और प्रकृति के कार्य-व्यापार से एकमेक अनुभव करने लगी है। नागमति को वर्षा ऋतु में विरह और भी सताने लगा है। जब प्रकृति में मोर, कोयल और दादुर अपना प्रेम-प्रसार कर रहे हैं, तो विरहाग्नि और भी प्रबल हो जाती है।

नागमति को पुष्य नक्षत्र के अवसर पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसकी चिंता हो रही है कि पति के न रहने से घर का छप्पर कैसे छाया जाएगा। इसीलिए वे रानी के स्थान पर उस स्त्री को ही सुखी मानती हैं जिनका पति उसके पास है। उन्हें ही गर्व करना चाहिए। जब प्रिय समीप न होकर परदेस में है, तो नागमति को तो जैसे सारा सुख ही भूल गया है।

काव्य सौंदर्य - भाषा - खालिस अवधी
रस - वियोग श्रृंगार
छन्द - चौपाई व दोहा
अलंकार - अनुप्रास

विरह के प्रभाव की तीव्रता में नागमति कहती है कि -

"यह तन जारौं छार कै
कहौं कि पवन उड़ाउ।
मकु तेहि मारग उड़ि परौं।
कंत धरै जहँ पाउ।

6/10

Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) नैंक हँसो ही बानि तजि, लख्यौ मुहुँ नीठि।
चौका-चमकनि-चौंध मैं परति चौधि सी डीठि।।

बिहारी के दोहों की समाहार-क्षमता अद्भुत है, परन्तु अक्सर ही दोहों के संदर्भ पूर्वपीठिका और विभाव-पक्ष की कल्पना पाठक को स्वयं ही करनी पड़ती है। प्रस्तुत दोहा जगन्नाथदास रत्नाकर द्वारा संपादित '<u>बिहारी-रत्नाकर</u>' से उद्धृत है।

नायक के चंचल स्वभाव से नायिका रूठ गई है और नायक के जाने पर सखी उस नायिका को मनाने की कोशिश कर रही है। सखी कह रही है कि अब यह बचकाना हठ छोड़कर रूठने की ज़िद बंद करो। नायक तो तुम्हारे सौंदर्य से अभिभूत होकर तुम्हारी तरफ देख न सका और उसकी छवि कहीं और चली गई। जैसे पथिक (तत्कालीन समय में) तारों

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भरी रात में सुबह के भ्रमवश यात्री को निकल पड़ते हैं, वैसे ही तुम्हारे नाक के आभूषण और हँसी के सौंदर्य ने नायक को अभिभूत कर दिया था।

सौंदर्य भाषा - ब्रजभाषा
रस - शृंगार
छंद - दोहा
अलंकार - उपमा, अनुप्रास

विशेष - उपरोक्त दोहे के समान ही बिहारी अपने दोहों में तत्कालीन समाज के प्रसंग उद्धृत करते चलते हैं। इसीलिए बिहारी के पाठक का बहुज्ञ नहीं, तो बहुश्रुत होना तो अपेक्षित ही है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) अरे भगाओ इस बालक को
होगा यह भारी उत्पाती
जुलुम मिटाएंगे धरती से
इसके साथी और संघाती
'यह उन सबका लीडर होगा
नाम छपेगा अख़बारों में
बड़े-बड़े मिलने आएंगे
लद-लदकर मोटर-कारों में

नागार्जुन सामाजिक प्रतिबद्धता के कवि हैं और उनकी कविताओं को भारतीय समाज की उथल-पुथल का प्रामाणिक दस्तावेज माना जा सकता है। प्रस्तुत काव्यांश 'हरिजन-गाथा' से उद्धृत है।

अग्निकाण्ड के बाद पैदा हुए बालक को जब गरीबदास देखते हैं, तो वे उस बालक में परिवर्तनकारी शक्तियों का भविष्य भी देखते हैं। इसलिए वे बुजुर्गों को हिदायत देते हैं कि सामंती मानसिकता वाले लोगों से इसकी रक्षा करना जरूरी है और रक्षार्थ इस बालक को वहाँ से हटाकर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कहीं दूर ले जाकर उसका पालन पोषण करना होगा। क्योंकि यह बालक और इसके भावी भविष्य में इन सामंती शक्तियों का अंत कर परिवर्तन की नींव रखेंगे।

काव्य-सौंदर्य-

भाषा - खड़ी बोली (अंग्रेजी शब्दों का यथास्थान प्रयोग - लीडर, मोटर कार)

रस - वीर (उत्साह की भावना)

छन्द - तुकांत

वस्तुतः इसके माध्यम से कवि अपनी आकांक्षा व्यक्त कर रहा है कि इस आततायी माहौल में -

" दलित माओं के सब बच्चे
अब बागी होंगे।
अग्निपुत्र होंगे वे अंतिम
विप्लव में सहभागी होंगे।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) 'अपनी मूल प्रकृति में पद्मावत एक त्रासदी है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

विशुद्ध पश्चिमी अर्थ में त्रासदी के तत्त्वों अर्थात् उदात्त नायक (हैमर्शिया) नैतिक भूल, विरेचन और दुखद प्रभाव की कसौटियों पर कसने मात्र से ही पद्मावत का त्रासदी के रूप में मूल्यांकन नहीं किया जाना चाहिए। पद्मावत 16वीं सदी की रचना है और स्वयं लेखक ने ऐसा संकल्प लेकर पद्मावत की रचना न की थी।

फिर भी पद्मावत में त्रासदी - तत्त्व की उपस्थिति से इंकार नहीं किया जा सकता। पारंपरिक प्रतिमानों पर देखें तो न तो नायक रत्नसेन का चरित्र ही इतना उदात्त है और न ही वह स्वयं किसी उदात्त कार्य में संलग्न है। परन्तु वह अलाउद्दीन पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विश्वास कर एक नैतिक भूल करता है और इसीलिए बली बना लिया जाता है।

इसी प्रकार प्रेम के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को पाकर वह पद्मावती को प्राप्त करता है, परन्तु देवपाल के साथ युद्ध के परिणामस्वरूप नायक स्वयं वीरगति को प्राप्त होता है और नायिकाएँ भी जौहर कर लेती हैं। अंत में अलाउद्दीन के पास केवल राख लगती है

"छार उठाई लीन्ह एक मूठी
दीन्ही उड़ाई पिरथमी झूठी।"

पद्मावत का सौंदर्य, रत्नसेन की वीरता और राजसी ठाट-बाट सब व्यर्थ सिद्ध होता है -

"कोई न रहा जग रही कहानी"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस लिहाज से देखें तो पद्मावत के इस त्रासद प्रभाव का लेखक को भी स्पष्ट भान था। इसीलिए मलिक मुहम्मद जायसी कहते हैं कि-

"जेई मुख देखा तेइ हँसा
सुना तो आए आँसु।

प्रेम के प्रभाव को वस्तुतः यह त्रासद तत्त्व ही और गहरा कर देता है। इस प्रकार नायक भले ही इतना उदात्त न हो पर वह प्रारम्भिक अंश में प्रेम के मार्ग में आने वाली हर बाधा का सामना करता है। वापस आकर अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करता है और आवश्यकता पड़ने पर कौटिल्य पद्धति से भी पीछे नहीं हटता।

पर राघवचेतन, देवपाल और अलाउ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे चरित्रों के माध्यम से त्रासदी की परिस्थितियाँ निर्मित होने लगती है। काव्य की परिणति पाठक पर गहरा त्रासद प्रभाव छोड़ती है। संभवतः इसी अर्थ में आलोचक विजयदेव नारायण साही ने 'पद्मावत' को हिंदी की नहीं वरन एशिया की पहली ट्रैजिडी कहा है।

बहुत अच्छा

11 1/2
20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

बिहारी की पहचान मूलतः एक रीतिसिद्ध कवि के रूप में है। वे बहुज्ञ भी हैं और भाषा व भावों की समाहार क्षमता के धनी भी। पर एक मर्मज्ञ कवि होने के नाते वे पाठक के साथ प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करने के लिए बिंबों की भी सृष्टि करते हैं।

सर्वप्रथम तो यह कि दोहा छन्द के छोटे आकार के कारण प्रायः विभाव-पक्ष उनकी कविता में अनुपस्थित रहता है। उस कमी को वे बिम्ब के माध्यम से भरते हैं। कभी-कभी तो वे बिंबों की पूरी श्रृंखला ही पाठक के सम्मुख उपस्थित कर देते हैं यथा -

कहत नटत रीझत खिजत
मिलत खिलत लजियात।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भरे भौन में करत हैं
नैनन ही सौं बात।।"

यहाँ नायक-नायिका के आँखों के माध्यम से ही रूठने-मनाने और प्रसन्न होने के बिंब उपस्थित किए हैं। एक अन्य उदाहरण में गोपियों और कृष्ण-लीला का एक बिम्ब उपस्थित किया गया है-

"बतरस लालच लाल की
मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहनु हँसै
दैन कहै नहि जाय।।"

बिहारी के काव्य में मूलतः दृश्य बिम्बों की ही सृष्टि है, परन्तु नायक-नायिका सभी प्रसंगों में स्पर्श-बिम्ब भी प्रयोग किए गए हैं। श्रव्य एवं अन्य बिम्बों का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रयोग प्रपेक्षाकृत कम मिलता है।

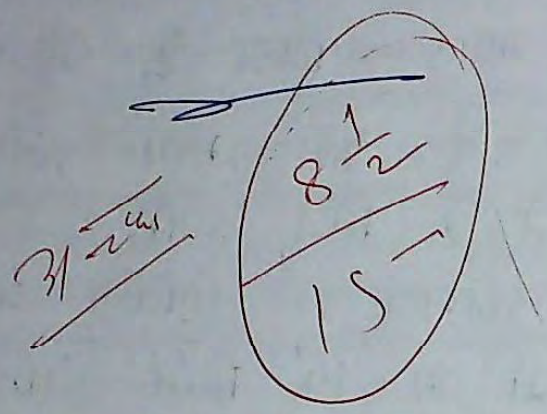

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पद्मावत में नागमती के विरह-वर्णन की विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'पद्मावत' में नागमती का विरह-वर्णन हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि माना जाता है। प्रथमतः तो यह कि विरह को ही प्रेम की कसौटी माना गया है और इस रूप में ~~सामाजिक~~ नागमती का विरह-वर्णन ही पद्मावत के प्रेमतत्त्व को अपेक्षित औदात्य प्रदान करता है।

नागमती के विरह वर्णन में साधारणीकरण की अद्भुत क्षमता है। नागमती अपना रानीपन भूलकर सामान्य गृहस्थ स्त्री की भाँति चिंतित है-

"पुष्य नखत सिर ऊपर आवा।
हौं बिनु नाह मंदिर को छावा॥"

विरह-प्रसंग में पद्मावत का आत्मविस्तार भी उल्लेख्य है। वह प्रकृति में अपने विरह

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का विस्तार भी देखती है और स्वयं प्रकृति भी उसका सहयोग करती है-

"फिरि फिरि रोव कोइ नहिं डोला
आधी रात बिहंगम बोला।"

अथवा

"पिउ सो कहेउ संदेसड़ा
हे भौंरा हे काग
सो धनि बिरहै जरि मुई
तेहिक धुआँ हम लाग॥"

नागमती के इस विरह भावना में आत्मनिवेदन, कर्त्तव्यभाव और लोक-समाज की मर्यादा का भी भलीभाँति ख्याल रखा गया है। रत्नसेन और पद्मावती के प्रेम-प्रसंगों के साथ रखकर देखने से इस विरह का वास्तविक ताप पता चलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साथ ही मध्यकालीन समाज में नारी की दुर्दशा का भी।

शैलीगत रूप में देखें तो नागमति का विरह अद्यात्मकता के स्तर पर पहुंचकर भी अपनी मार्मिकता की वजह से असंतुलित नहीं होने पाता -

"रकत न रहा
बिरह तन जरा
रती रती होई
नैनन्ह ढरा।"

बहुत अच्छा

9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) पद्मावत कितना इतिहास है और कितनी कल्पना? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्यकालीन रचनात्मकता इतिहास और कल्पना के सम्बंध में उस प्रकार वस्तुनिष्ठता का पालन करना श्रेयस्कर नहीं समझती जैसा कि वर्तमान समय की रचनात्मकता। और दूसरे कि पद्मावत को अलग-अलग विद्वानों ने 'मध्यकालीन रोमांचक आख्यान' और 'लोक-काव्य के शिष्ट सूफी संस्करण' के रूप में परिभाषित किया है।

इस लिहाज से देखें, तो पद्मावत का प्रथम पूर्वांश काल्पनिक वृत्तों पर आधारित है। सिंहलद्वीप, पद्मिनी नारियाँ, हीरामन तोता और समुद्र सहित विभिन्न देवी-देवताओं की इस अंश में स्थान-स्थान पर व्याप्ति है।

इसकी तुलना में द्वितीय उत्तरांश

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में पात्र और स्थान को ऐतिहासिक रूप से अंकित किया जा सकता है। यहाँ चित्तौड़ और मेवाड़ के राजा हैं, रतनसेन और अलाउद्दीन खिलजी हैं और इनके मध्य का संघर्ष भी। इस प्रसंग में भी कथा का प्रवाह राघवचेतन और देवपाल, गोरा-बादल जैसे चरित्रों के माध्यम से आगे बढ़ता है। कथाक्रम के विकास का कारण पद्मावती का सौंदर्य है न कि राजनीति अथवा साम्राज्य-विस्तार की आकांक्षा।

इसके अतिरिक्त इस प्रबंधकाव्य का एक तसव्वुफ़ पर आधारित प्रतीकार्थ भी है। यह प्रतीकार्थ ऐतिहासिकता के दावे को और भी सीमित कर देते हैं।

मलिक मुहम्मद जायसी की तरह ही कुछ अन्य कवियों ने भी इस कथा को आधार

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बनाकर रचना की है, पर अमीर खुसरो जैसे ऐतिहासिक स्रोतों में इसका जिक्र नहीं मिलता। इसीलिए इतिहास व कल्पना पर विचार करते समय हमें तत्युगीन प्रामाणिकता को भी ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

पद्मावत अंततः लोक-आख्यान और कवि-कल्पना पर आधारित रचना है। इतिहास आभास रूप में उपस्थित होकर कथाप्रवाह को विश्वसनीय बनाने के लिए प्रयोग में लाया गया है।

अच्छा

11/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जायसी और कबीर के रहस्यवाद की तुलना कीजिये। 15

सर्वप्रथम आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने ही अपने इतिहास ग्रंथ में इस तुलना का आधार प्रस्तुत किया। शुक्ल जी के अनुसार कबीर का रहस्यवाद साधनामूलक है और जायसी का भावात्मक। इसी प्रकार कबीर का रहस्यवाद उन्हें खंडन-मंडन की प्रवृत्ति की ओर ले गया और जायसी ने प्रेमतत्त्व के माध्यम से मानवमात्र को स्पर्श किया है।

शुक्ल जी के मत से मूलतः सहमत होते हुए भी, उससे पूर्णतः सहमत होना संभव नहीं है। उदाहरण के लिए जायसी के यहाँ भी साधनात्मक रहस्यवाद के संकेत मिलते हैं:

"गढ़ तस बाँक जैसि तोरी काया।
पुरुष देख ओही कै छाया॥"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार कबीर के यहाँ भी "हमारा यार है हममें / हमन को इन्तजारी क्या" का भाव पाया जाता है।

हिन्दुओं और मुस्लिमों दोनों को फटकारते हुए भी कबीर ने प्रेमतत्त्व के महत्त्व को मानवमात्र की पहचान को रेखांकित किया है। उदाहरण के लिए -

"कबिरा यह घर प्रेम का
खाला का घर नाहिं
सीस उतारै भुईं धरै
सो पैसे घर माहिं"
- कबीर

"प्रेम पहार कठिन बिधि गढ़ा
सो पै चढ़े सीस सों चढ़ा"
- जायसी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अतः जायसी और कबीर दोनों की तत्कालीन प्रभावों को खुले रूप से ग्रहण कर साहित्य रचना कर रहे थे। इनके रहस्यवाद में अंतर का एक बड़ा कारण काव्यरूप (मुक्तक व प्रबंध) के अंतर व कविकर्म के प्रति सजगता व प्रतिबद्धता से उपजा है।

8
15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दिनकर की कविता 'कुरुक्षेत्र' में व्यक्त 'मानवतावादी दर्शन' के स्वरूप पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात दिनकर जैसे कवि के रूप में यह विचार आना स्वाभाविक था कि युद्ध ही सभी मानवीय समस्याओं का मूल है। यह जिज्ञासा उन्हें महाभारत तक ले गई और इसीलिए 'कुरुक्षेत्र' में स्थान-स्थान पर उनकी जिज्ञासा के मूल प्रस्थान बिंदु अर्थात् मानवतावाद के चिह्न दिखाई देते हैं।

युद्ध के बाद सौभाग्य की मुद्रा अपनाए युधिष्ठिर से भीष्म कहते हैं कि परलोक नहीं इहलोक ही मुख्य है-

"ऊपर सब कुछ शून्य शून्य है
कुछ भी नहीं गगन में
धर्मराज जो कुछ भी है वह है
धरती में जीवन में।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भीष्म की एक सीख यह भी है कि मानवता की रक्षा के लिए कभी शांति आवश्यक होती है और कभी क्रांति। इसलिए मनुष्यों को नैतिक संघर्ष के समय दुविधाग्रस्त नहीं होना चाहिए-

"जीवन उनका नहीं युधिष्ठिर
जो उससे डरते हैं
वह उनका जो चरण रोप
निर्भय होकर लड़ते हैं।"

मानवतावादी मूल्यों में सभी मनुष्यों को समान मानने की भावना निहित है। इसीलिए कुरुक्षेत्र में कहा गया है-

"जब तक मनुज-मनुज का
सुख भाग नहीं सम होगा।
शमित न होगा कोलाहल
संघर्ष नहीं कम होगा॥"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार कुरुक्षेत्र में युद्ध की आवश्यकता, नैतिकता - अनैतिकता, धर्म-अधर्म और इहलोक-परलोक पर विचार करते समय मानव-अस्तित्व को ही केंद्र में रखा गया है।

अच्छा

8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'B'

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) मैं प्रेम को संदेह से ऊपर समझती हूँ। वह देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है। संदेह का वहाँ जरा भी स्थान नहीं और हिंसा तो संदेह का ही परिणाम है। वह संपूर्ण आत्मसमर्पण है। उसके मंदिर में तुम परीक्षक बनकर नहीं, उपासक बनकर ही वरदान पा सकते हो।

गोदान में प्रेमचंद ने मालती और मेहता के माध्यम से प्रेम और स्त्री-पुरुष सम्बंधों के आधुनिक प्रसंगों की पड़ताल की है।

मालती अपने चरित्र रूप में अधिक गम्भीर होकर सामने आती है और वह तत्कालीन छायावादी संस्कारों के प्रभाव से परिपूर्ण प्रतीत होती है। प्रेम के आदर्श को व्याख्यायित करती हुई वह कहती है कि प्रेम में आत्म भावों का ही संचार होता है यतः इसमें संदेश, अविश्वास और हिंसा का स्थान नहीं है।

प्रेम के अंतर्गत तो विश्वास, समर्पण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और आत्मा के औदात्य का दर्शन होता है। इसीलिए ऐसा व्यवहार प्रेम नहीं अपितु अधिकार - भावना से उपजता है।

साहित्यिक सौंदर्य

भाषा - तत्सम बड़ीबोली

शैली - विश्लेषणात्मक, विचारप्रधान।

विशेष - प्रेम सम्बन्धी यही विचार प्रसाद के 'देवसेना' जैसे चरित्रों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंधों में भी देखे जा सकते है।

6
10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

मोहन राकेश कृत 'आषाढ़ का एक दिन' सृजन और सत्ता के संघर्ष के साथ-साथ अस्तित्ववादी विमर्श का भी एक आख्यान प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत प्रसंग ऐसे ही विमर्श से सम्बंधित है जहाँ कालिदास वापस मल्लिका के पास लौटकर आता है।

कालिदास की विडम्बना है कि अब वह लेखक नहीं रह गया है बल्कि शासक वर्ग का प्रतिनिधि बन गया है। उसके सर्जक व्यक्तित्व को भी यह स्वीकार नहीं है, इसीलिए विभाजित व्यक्तित्व की तरह वह मल्लिका से कहता है कि जिस लेखक कालिदास को तुम जानती थी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वह अब यहाँ नहीं है, इसलिए संभवतः तुम मुझे नहीं पहचान पा रही हो। मैं स्वयं अपने इस रूप को नहीं पहचानता हूँ।

साहित्यिक सौंदर्य

भाषा - साहित्यिक खड़ीबोली

शैली - विचारप्रधान

विशेष - मोहन राकेश ने इस प्रसंग के माध्यम से आधुनिक जीवन की अस्तित्ववादी विडम्बना को प्रस्तुत किया है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) पर मुझसे कुछ नहीं बोला जाता। बस मेरी बाँहों की जकड़ कसती जाती है, कसती जाती है। रजनीगन्धा की महक धीरे-धीरे तन-मन पर छा जाती है। तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरों का स्पर्श महसूस करती हूँ, और मुझे लगता है, यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था।

मन्नू भण्डारी ने अपनी कहानी "यही सच है" के माध्यम से प्रेम की नए सिरे से - स्त्री की दृष्टि से - पड़ताल करने की कोशिश की है।

नायिका एक ही समय में संजय और निशीथ के प्रेम को लेकर द्वन्द्वग्रस्त है। यह संशय स्वयं उसके मन का है। और आधुनिक स्त्री-पुरुष सम्बंध की विडम्बना भी इस संशय में ही निहित है। कलकत्ता में निशीथ के प्रति उसकी पुरानी भावनाएँ जाग्रत हो जाती है, पर पत्र लिखने पर भी जब निशीथ का कोई उत्तर नहीं आता, तो वह पुनः संजय के प्रेम की ओर आश्वस्त हो जाती है। अब उसे वर्तमान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में प्रेम का यह रूप ही यथार्थ और आश्वस्तकारी प्रतीत होता है।

साहित्यिक सौंदर्य

भाषा - सरल साहित्यिक खड़ीबोली।

शैली - भावप्रधान।

विशेष - लेखिका का मंतव्य है कि प्रेम को लेकर नारी के मन में भी पुरुष के समान दुविधा होती है। इस प्रकार परम्परागत एकनिष्ठ प्रेम को स्त्री का कर्तव्य मानने की अपेक्षा यथार्थ को प्रमुखता दी गई है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) जब आप याद करेंगे कि मुगल बादशाहों के ज़माने में इन कोल किरातों का आखेट होता था और जो पकड़े जाते थे, वे काबुल में बेच दिए जाते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शासन में लाखों की तादाद में उन्हें जरायम पेशा करार दिया गया, तब तुलसीदास की प्रगतिशीलता समझ में आएगी।

रामविलास शर्मा ने 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' नामक निबंध में प्रगतिशीलता को समय-सापेक्ष रखकर देखने का आग्रह प्रकट किया है।

लेखक के अनुसार तुलसीदास पर ब्राह्मणवाद या वर्णाश्रमवाद का आरोप लगाने से पूर्व उस देश-काल को भी समझने की जरूरत है।

तत्कालीन समाज में शासक-वर्ग द्वारा आदिवासियों को कितनी ही अमानवीय परिस्थितियों में रखा जाता था। उनका व्यापार और यहाँ तक कि शिकार भी होता था। आगे चलकर अंग्रेजों ने भी शोषणकारी नीति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपनाते हुए इन्हें अपराधियों के रूप में वर्गीकृत कर दिया है।

ऐसे में सोलहवीं सदी में तुलसीदास ने इन्हें राम के विरोधियों के रूप में चित्रित कर प्रगतिशीलता का ही परिचय दिया है।

साहित्यिक सौंदर्य

भाषा - सरल सहज हिन्दी

शैली - विश्लेषणात्मक, प्रवाहपूर्ण

विशेष - इसी लेख में रामविलास जी तुलसी साहित्य के अंतर्विरोधों का विश्लेषण करने की प्रवृत्ति नहीं प्रदर्शित करते हैं। प्रगतिशीलता के साथ-साथ अंतर्विरोध भी सहज और मानवीय है।

5 1/2
10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्तक होते ही जाते हैं।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में हिन्दी बौद्धिक वर्ग एक नवजागरण का नेतृत्व कर रहा था। अनेकानेक प्रगतिशील विचारों के साथ-साथ इस नवजागरण में धर्म और स्त्री-सम्बंधी मान्यताओं के अपने अंतर्विरोध भी पाए जाते हैं।

प्रस्तुत गद्यांश बालकृष्ण भट्ट के निबंध 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' से उद्धृत है।

लेखक का मंतव्य है कि परवर्ती अर्थात पुराणों और मध्यकाल के समय में हिन्दू धर्म में अनेक मत-मतांतर होते गए। वेदों और उपनिषदों को मानने की बजाय विभिन्न मत, संप्रदाय और

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जातियों में हिन्दू समाज का विभाजन होता गया।

भाषा- भारतेंदुयुगीन खड़ीबोली (मुहावरों का प्रयोग और जीवंत भाषा)

शैली- भावप्रधान।

विशेष- वर्तमान में नारीवादी दृष्टि से उपरोक्त गद्यांश की आलोचना की जाती है कि नारी के पास भी स्व-नियमन का अधिकार है। और "एक नारि जब दो से फंसी जैसे सतर वैसे दासी" जैसी अभिव्यक्तियाँ अपमानजनक है।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'गोदान' नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपन्यास-विधा में नामकरण प्रायः प्रतीकात्मक संकेत होते हैं। जिस मूलभूत मानवीय सत्य या परिस्थिति को आधार बनाकर उपन्यास की रचना की जाती है, वही नामकरण का आधार बनता है।

'गोदान' उपन्यास में नामकरण की सार्थकता पर विचार करने से पूर्व यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि 1936 ई० के भारत का स्वरूप क्या था। वह समाज औपनिवेशिक दासता के साथ-साथ महाजनी सभ्यता और मरजाद के नियमों से जकड़ा था।

दिन-प्रतिदिन के आधार पर अंतिम दो का एक किसान के जीवन पर ज्यादा प्रभाव था। इस रूप में गोदान की गाय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उन सामाजिक-धार्मिक रूढ़ियों का प्रतीक है जो किसान को घेरे हैं। इनमें जाति-व्यवस्था से लेकर अनमेल विवाह, पण्डाओं का वर्चस्व व अंधविश्वास तक शामिल है। होरी का चरित्र इन सबके नीचे दबा हुआ किसान है।

दूसरे रूप में देखें तो गाय हमेशा से एक किसान का सम्मान मानी जाती रही है। होरी की प्रारम्भ से ही अभिलाषा है कि वह एक गाय पाले। यह अभिलाषा ही उसके गले का फंदा बन जाती है, उसका परिवार भी टूटता है और वह कर्ज के जाल में भी फँसता जाता है।

जिस होरी को जीवन में गाय का सुख नहीं मिलता उससे मृत्यु के समय गोदान की अपेक्षा की जाती है। यह तथ्य

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हमारी सामाजिक व्यवस्था की विडम्बना का परिचायक है। अंततः धनिया अपनी मुट्ठी के पैसे खोलकर कहती है कि यही उसका गोदान है।

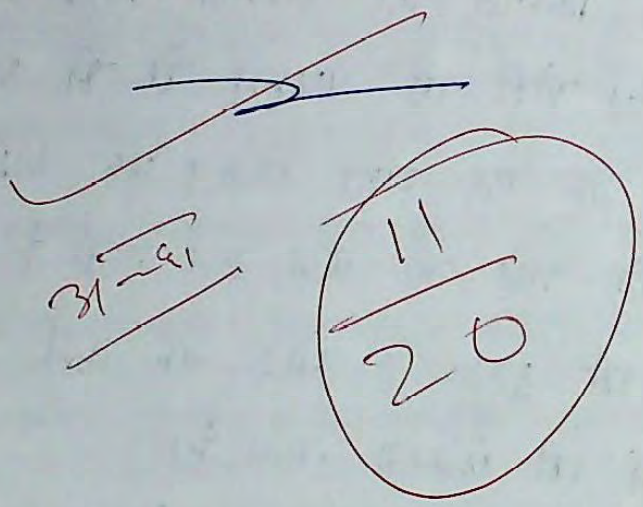

इस प्रकार गोदान इस उपन्यास का सर्वाधिक सार्थक नाम है।

अच्छा

11/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' की श्रेष्ठता के कारणों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'ईदगाह' बाल-मनोविज्ञान पर केंद्रित कहानी है, परन्तु कहानी-कला के सभी प्रतिमानों पर वह एक श्रेष्ठ कहानी ठहरती है।

पारम्परिक प्रतिमानों अर्थात् कथानक, कथा, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, भाषा आदि के आधार पर विचार करें, तो सामान्य जीवन की सामान्य घटनाओं से महत् सत्य को खोज लाने की प्रेमचंद की कला का पता चलता है। हामिद और अमीना जैसे चरित्र, सरल-सहज भाषा और ईदगाह जैसी परिवेशगत घटना का आधार ही इस कहानी की साधारणीकरण की क्षमता को बढ़ाता है।

हामिद और उसके दोस्तों के संवादों से समाज और प्रशासन की व्यवस्था के भ्रष्टाचार

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का पता चलता है। परन्तु इस कहानी की सफलता का मूलकारण है - इस सरलता के भीतर से झाँकती मानवीय आस्था।

बालक हामिद ने छोटी सी उम्र में 'भावनागत काठिन्य' के चलते अपनी इच्छाओं को दबाकर दूसरों की आवश्यकताओं को समझने की कला विकसित कर ली है।

शिल्प के स्तर पर सरल सहज भाषा, मुहावरों का प्रयोग, संवाद-शैली और क्रमशः वर्णन एवं चित्रण प्रविधियों का प्रयोग भी इसकी सफलता का आधार है।

कहानी के कुछ अन्य पहलुओं की भी चर्चा होनी चाहिए
अच्छा प्रयास

7 1/2 / 15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

'नई कहानी' आंदोलन में भाव-जगत के साथ-साथ शिल्प के स्तर पर भी नवीन प्रयोग देखने को मिलते हैं। मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' में भी 'डायरी-शैली' और चेतना-प्रवाह-पद्धति का प्रयोग किया गया है।

इनके माध्यम से लेखिका को नायिका के मन की दुविधा और पशोपेश को पाठक के सम्मुख स्पष्ट करने में मदद मिली है। पाठक समझ पाता है कि नायिका किन दो पाटों के मध्य झूल रही है।

इसी प्रकार भाषा और शैली के स्तर पर देखें तो वाक्यों का आकार छोटा है, जिससे भावों के उतार-चढ़ाव की प्रभावी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this

अभिव्यक्ति हुई है। जैसे -

" तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरों का स्पर्श महसूस करती हूँ, और मुझे लगता है, यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था।"

इस प्रकार नई कहानी के अध्याय 'यही सच है' का शिल्प भी सहज और प्रभावी बनकर उभरता है।

——— x ———

अच्छा प्रयास

7½
15

Copyright – Drishti The Vision Foundation